कृषक ज्योति

कृषक ज्योति
Krishak Jyoti

भाग -1, अंक 2 जनवरी-2026

त्रैमासिक पत्रिका

संपादक - मंडल

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

मुख्य संपादक

ediotorinchief@krishakjyoti.in

प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान विभाग,
कुलभास्कर आश्रम PG कॉलेज
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सौम्या तिवारी

संपादक

editor@krishakjyoti.in

प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा उत्तर प्रदेश
राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे

संपादक

editor@krishakjyoti.in

सहायक प्रोफेसर कीट विज्ञान विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार

संपादक

editor@krishakjyoti.in

सहायक प्रोफेसर कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त

सह-संपादक

coeditor@krishakjyoti.in

टीचिंग एसोसिएट कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, त्रैमासिक पत्रिका, कृषि पत्रिका

पंजीकृत कार्यालय - 4/4सी, म्योर रोड, इलाहाबाद, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश -211002

Website - www.krishakjyoti.in

E-mail - editorinchief@krishakjyoti.in

Contact - 9450681433

e-ISSN No. 3108-1770

काली गाजर की उन्नत खेती

उजाला सरोज[1], डॉ लवकुश पाण्डेय[2] , अनंत तिवारी[3] एवं अनामिका यादव[4]
कृषि परास्नातक छात्रा - उद्यान विज्ञान विभाग (कृषि संकाय)
(प्रो राजेंद्र सिंह "रज्जू भय्या" विश्वविद्यालय,प्रयागराज)

काली गाजर (Black carrot) वैज्ञानिक रूप से Daucus carota var. atrorubens कहलाती है। यह गाजर की एक पारम्परिक किस्म है, जो अपने गहरे बैगनी या काले रंग के कारण पहचानी जाती है। उत्तर भारत, विशेषकर उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में इसकी खेती लम्बे समय से की जाती रही है।

पोषण की दृष्टि से काली गाजर अत्यन्त लाभकारी है। इसमें विटामिन ए, विटामिन सी फाइबर तथा खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। इसके नियमित सेवन से हृदय स्वास्थ्य में सुधार, रक्तचाप नियंत्रण, पाचन तंत्र की मजबूती तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। एंथोसाइनिन की उच्च मात्रा होने के कारण यह शरीर में फ्री रेडिकल्स को कम करने में सहायक होती है, जिससे कई प्रकार के दीर्घकालिक रोगों का खतरा कम हो जाता है। काली गाजर की 100 ग्राम जड़ में नमी 86-88 ग्राम कार्बोहाइड्रेट 9-10 ग्राम, शुगर 4-5 ग्राम, फाइबर 2-3, 0.1-0.3 ग्राम कैलोरी 40-50 ग्राम, प्रोटीन 0.81 ग्राम, फैट कैलोरी होती है। इसमें विटामिन ए 16700 आईयू से अधिक और विटामिन सी 5.9 एमजी पायी जाती है।

उपयुक्त जलवायु और मृदा

काली गाजर मूल रूप से एक ठण्डे मौसम की फसल है। इसलिए यह भारत के मैदानी इलाको में सर्दियों में सबसे अच्छी होती है। काली गाजर बुआई मैदानी इलाकों में सितम्बर से नवम्बर के बीच की जानी चाहिए। इसके लिए ठंडी जलवायु उपयुक्त रहती है। काली गाजर के लिए उच्चतम तापमान 10 से 21°C होना चाहिए। ज्यादा तापमान होने से जड़ो का रंग खराब हो जाता है। काली गाजर की खेती के लिए उत्तम जल निकास वाली दोमट व बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है। इसकी खेती के लिए मिट्टी की पी एच 6-7.5 के बीच होनी चाहिए।

खेत की तैयारी

काली गाजर की अच्छी फसल के लिए खेत की तैयारी व्यवस्थित तरीके से करनी चाहिए। खेत की गहरी जुताई कर मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए। यदि भूमि रेतीली हो तो 2 से3 बार जुताई करना चाहिए। यदि मिट्टी चिकनी हो तो पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करना चाहिए। तथा 2 से 3 जुताई करके पाटा चलाये

e-ISSN No. 3108-1770

तथा मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए। अन्तिम जुताई के समय 20-25 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर खेत में मिलायें। खेत समतल होना चाहिए ताकि पानी जमा न हो। बेड या क्यारियों में बुवाई करने से जड़ो का विकास बेहतर होता है। और उत्पादन में वृद्धि होती है।

बीज चयन और बुवाई

उच्च गुणवत्ता वाले प्रमाणित बीज का चयन अच्छी उपज के लिए बहुत जरूरी है। प्रति हेक्टेयर 4-5 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। बुवाई का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से नवम्बर है। बीजों को 1 से 1.5 सेमी गहराई पर कतारों में बोया जाता है। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी और पौधे से पौधे की दूरी 5-7 सेमी रखें। बुवाई के बाद हल्की सिंचाई करें। अंकुरण 7-10 दिन में शुरु हो जाता है और शुरुआती अवस्था में पौधों की उचित देखभाल आवश्यक होती है।

काली गाजर की उन्नत किस्में

काली गाजर की खेती के लिए बीज की अच्छी किस्मों का चुनाव करना चाहिए। जैसे - पूसा आसिता, काशी कृष्णा, ब्लैक वण्डर, ब्लैक काली, कलिका, डीप पर्पल, गाजर की कुछ अच्छी किस्में है।

बीज की मात्रा

काली गाजर के लिए बीज की मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए 4 से 6 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है,

बीजोपचार:-

बीज की बुआई से पहले थायराम, 2-3 ग्राम प्रति किलो बीज में मिलाकर बीजोपचार करना चाहिए।

बुआई का समय

भारत में काली गाजर की बुआई सितम्बर से नवम्बर तक की जाती है। उत्तरी भारत में यह रबी मौसम में उगाई जाती है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

काली गाजर की अच्छी उपज के लिए संतुलित खाद एवं उर्वरक प्रबंधन आवश्यक है।

- खेत की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर लगभग 20-25 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद मिलानी चाहिए।
- इसके साथ 60-80केजी नाइट्रोजन 40-50 केजी फास्फोरस 40-60केजी पोटाश देना उपयुक्त रहता है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुआई के समय और शेष दो बराबर भागों में 30 व 45 दिन बाद दे।
- सूक्ष्म पोषक तत्वो में जिंक और बोरान की कमी होने पर उनका भी छिड़काव करें उचित सिंचाई और निराई गुड़ाई के साथ उर्वरक देने से जड़ का आकार रंग और मिठास बेहतर होता है।

सिचाई प्रबन्धन

काली गाजर की फसल को नियमित और हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है पहली सिचाई बुआई के तुरन्त बाद करे। मिट्टी में नमी बनाए रखना जरूरी है लेकिन जलभराव नहीं होना चाहिए क्योकि इससे जड़ सड़न की समस्या हो सकती है। जड़ो के विकास के समय पर्याप्त नमी रहने से आकार और गुणवत्ता बेहतर होती है।

निराई-गुड़ाई एवं खरपतवार नियंत्रण

बुबाई के 20-25 दिन बाद पहली गुड़ाई करनी चाहिए तथा 40-45 दिन बाद दूसरी गुड़ाई करनी चाहिए उसके बाद बाकी की गुड़ाई 20 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए इसकी गुडाई के दौरान पौधो का खास ध्यान रखना चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबन्धन

गाजर में पत्ती झुलसा और जड़ सड़न रोग लगते है। पत्ती झुलसा में पत्तियों पर भूरे धब्बे बनते हैं और पत्तिया सूख जाती हैं। जड़ सड़न मे गाजर काली होकर सड़ जाती है।

e-ISSN No. 3108-1770

प्रबन्धन

अच्छा बीज ले और खेत में पानी रुकने न दें। जरुरत होने 'पर दवा छिड़काव किया जा सकता है।

कीट

गाजर में चेपा (एफिड) और कटवर्म ज्यादा नुकसान करते है। चेपा छोटे कीड़े होते है : जो पत्तियों का रस चूसते हैं, इससे पत्तिया मुड़ जाती हैं। कटवर्म पौधे को जमीन के पास से काट देते है बचाव के लिए खेत साफ रखे और गहरी जुताई करें।

प्रबन्धन

नीम तेल 5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में छिड़काव करने से चेपा कम होते हैं। ज्यादा कीट होने पर दवा का हल्का छिड़काव किया जा सकता है।

खुदाई व कटाई

काली गाजर की फसल 90-110 दिनो में तैयार हो जाती है। जड़ो के गहरे रंग और उचित आकार पर खुदाई करें। खुदाई से पहले हल्की सिंचाई करने से जड़े आसानी से निकलती है।

भण्डारण

काली गाजर को ताजी एवं ठण्डी सूखी जगह पर रखनी चाहिए। 0-4 ^{o}c तापमान पर कोल्ड स्टोरेज में 2-3 महीने एक सुरक्षित रखा जा सकता है।